

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्तलिपि ग्रथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५ (२३९ (१८९))  
ग्रंथ नाम शुर चारखामदा.

विषय मराठी काव्य.



Joint Production of  
The Rajeshwari Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yeshwantrao Devan Paturkar Mandal, Mumbai.

रामदास

# मराठी



धूवारपान

तुक्रिया, शिवराम, टाका जगदीर, गंबजी, इंडिया  
सावारास, रामदास, योगे अंगंगा

१०  
॥ श्री गणे शायनमः ॥ श्री हात्मा ॥  
पुराणी ॥

॥ पुरलोतु तु द्विश्वरणि भरलेकानामनमोहना  
गध् ॥ अमलकमलधिमन्तदलाराजीवन्धिं  
॥ ना ॥ ३ ॥ असनिद्वा योनि भोजने गोमनिस्व  
॥ मनिमदनियुक्तनिकरीकरना ॥ ५ ॥ पतिमह  
॥ घनधिं मलधमनयोहि यलमनसमीरादेश  
॥ यना ॥ ६ ॥ जयजपतना भनंदत धनयनाथ  
॥ करोकरणा राजि ॥

॥ अन्नजानके एण्डेयक  
सिससिद्धरवविधि  
का ॥ चरारे चाहा  
युक्तरवधादावा  
का लहुतापापिका  
योगि ॥ २ ॥ बालकेव  
॥ अदानताहूदणिचिंचता चिद्युतराणभा  
॥ गदातकच्युत्तमाणीतोडाहनेजाणावे ॥ ३ ॥ या  
चहातोररयहरीह आश्वान्वास्तन धारभालि  
प्राच्यह चर्वे दोरीलि हिन्देदिसताहे मजला ॥  
४ ॥ वाऽवान्वान्वादमेवि काटिलउद्यापनावलि  
होतु पौरघरविकलेइलधि ॥ तजहाठोहा  
॥ ५ ॥ ग्राहणलतेवं भूषणहृदयो श्रीवहलात  
॥ नवदीठोहा ॥ लब्धालणजनकाजनादेनाघ  
॥ रिचावन्द ॥ ६ ॥



॥ श्री धुर आरव्यन ॥ ब्राह्मण

॥ स्तुर्य वो सिनुता न पालुराय ॥ सूर  
॥ लिष्टि तिजयोस्थि दोन जाय ॥ क  
॥ मिरु सिभा संत ब्रीत माय ॥ पह

(2)  
॥ यात्मा स्मर्त्यण जि श्री भगवान् वरि तुरोर उत्त  
॥ गाम गोउ चान् हारि विभा च्यादवीन् रारि विल  
॥ दवरी माचि ॥ ७ ॥ करै लद याइ धाची चोरी भो  
॥ दिल ना पाछा च्यापोरी अब ध्यासे दछा चवधरी  
॥ वाद अणी वायका ॥ ८ ॥ याकास वर्ण गीया दान षज  
॥ रवी वारि तजा वीदान परि युसंल मजन नदान माला ह  
॥ जि सांगितले ॥ ९ ॥ अ पिकह कभ विष्य अ कावा  
॥ लटधे तील वायका अब च्यात्र नाती लुन नाय  
॥ कथा चेमरे लागति ॥ १० ॥ अम्बरि गाठांये  
॥ के भजावा किंचावे गमा चजावा किंचावा पडावा  
॥ वण आलावा ल  
॥ हाम्मान चित्व  
॥ गिक्कावा किंचावा  
॥ बडावा साधु गान  
॥ जि सर्वपाया ल  
॥ जाती न धातरा विष्वव काति ॥ १३ ॥ यदाद चाइ  
॥ ऐके उत्ताचि उक्षण ॥ १४ ॥

See Below  
Samsundar, Mandai, Dhule and the  
Lesser  
Provinces  
of Maharashtra

॥राधीनामा सिजे वीध्याया॥१॥व  
 ॥सीदेसी जालायक पुत्र॥सकुमार  
 ॥आकर्षणप्रभेत्रा॥भत्तराजवैकं  
 ॥ठपालमीत्रा॥छाणमाणेरे रवीवज्ज  
 ॥वीचीत्रा॥२॥पाचर्षलोटलीध्वनि  
 ॥आंगी॥वीतानाही द्वार काजयाला  
 ॥गी॥पुसेमाते तंकाजयोगी॥ता  
 ॥तकोरे काय वेगी॥३॥मध्ये  
 ॥मायताकार तुङ्गा॥धरात  
 ॥राबोलती अजा॥यहबाले  
 ॥पाहीनपीतामाजानको जातु॥  
 ॥प्रारीलराजभाजा॥४॥पुर्वपु॥  
 ॥अष्ट्येसुदिन्तुगवला॥मुलोसांगती  
 ॥जैरोधरागला॥राजद्विश्वीसम्मुख  
 ॥उभाटेला॥पिता पाहे तो प्रोग्रासेव  
 ॥बला॥५॥आनीवारतो मोहे पुरआ  
 ॥ला॥उच्छ्वासीमाडीयो बेसविला



The Rajawade Sanskrit Mantra, Dhule and the Yashwantrao Patelnani, Mumbai.

॥ बाढ़ राहूर्वे छ वित्तनु ज्याला ॥  
॥ न साहे चीरा पी को पआला ॥ ८ ॥  
॥ उंचबक्के त्रोधा धीशि रवाटा की ॥  
॥ हिणेकोण बै सवीला राज आँकी  
॥ राव के साखे छ वितो कोतु की ॥ ९ ॥  
॥ रुहराजा हो ईलधरा लोकी ॥ १० ॥  
॥ रुनीया स्लापन मानव चीती ॥ पदे  
॥ लोटीनी भापी ती ॥ रुडला  
॥ लामाउ लिउ ॥ ११ ॥ आपूर्पाते  
॥ तेहाल कीती ॥ १२ ॥ इचैमाय  
॥ अकायना सुजाले ॥ को लेपागि  
॥ येतु जग्नी जीयले ॥ मजराय मागि  
॥ यबैस विले ॥ राजभाजे न पदता  
॥ उपले ॥ १३ ॥ बुझा वीती माउ लीका  
॥ यबोले ॥ जवेदवसीनागी पुजीये  
॥ ले ॥ तव सर्वव्यर्थ आसेगोले ॥ स्व

॥ प्रज्ञौ से माजी यबै सवीले ॥ ५० ॥ धर  
 ॥ बोले सादेच कै सा अहे ॥ वसे कोटे तो  
 ॥ सागलव लाहे ॥ सा सी मागु आक्षर  
 ॥ वास टाये ॥ उटवी जेदु सरिं प्रजमाये  
 ॥ ॥ ॥ ॥ आरे बाळा वल कले जयधारी ॥  
 ॥ राख आंगि पैकोंसि दिं गावरी ॥ सर्व  
 ॥ नोगी उदासु श्वरी ॥ मालीरंजनि बु  
 ॥ उत्तीनी राम ॥ हाठ योगी योगी  
 ॥ भ्याद्यि श्वरी ॥ रवाहे आकाश  
 ॥ मुख मोनी ॥ रुद्रणा दित्ताप  
 ॥ तीक्ष्णी ॥ जयालागी सोसी ती माहाम  
 ॥ नीरुशी बुद्धी काघ बावय सान ॥  
 ॥ तुला के सहो ईलदस राण ॥ धर  
 ॥ बोले सजीन जीव ब्राण ॥ न जेटे जो  
 ॥ देणर स्थान ॥ ५१ ॥ उभाजे साले साच  
 ॥ नीचिवेग ॥ रुदत पायी लागली मात  
 ॥ मागे ॥ युवती लाराया सदुत सागे ॥



राजावदे (Anshuman Mandal, Dhule and the  
Court Project, 2005)

॥ रावो जाला धावरा मो हो सागे ॥ १६  
॥ सर्वसैर्व्याचेमुच बाळमाझे ॥ धुरु  
॥ जेला घेणार राज्य वो स्ते ॥ तजीन जा  
॥ णवनांत लोकल जे ॥ जिए काये मा  
॥ मारी द्रुव भाजे ॥ १७ ॥ लवलाहें धा  
॥ वला धुरु पादि ॥ इणे बाळा औंके  
॥ रेय कगो स्ते ॥ गावीत धुरु नी  
॥ हानवटी ॥ दा ला जीवक  
॥ टी ॥ १८ ॥ वको नयक गावा ॥ धु  
॥ रु बोले दे ईल दे ॥ १९ ॥ पाच गावदी  
॥ धले फीरआ तार ॥ धुरु बोले मागन  
॥ जंगनाथा ॥ २० ॥ धराचल दे ईन यक  
॥ देशा ॥ धुरु बोले दे ईल जगदे श्वरा ॥  
॥ आर्धराज्य दि धले पीरमागे ॥ धुरु  
॥ इणे दे ईलर मारग ॥ २१ ॥ सर्वराज्य दे  
॥ ईन आणतु सी ॥ धुरु बोले वासी

॥लाजमासी॥ स्नेहे कारे साडी लाधुर  
 ॥आजी॥ काळ तो डाजा क्वो याजगामा  
 ॥जी॥ २०॥ धुरु बोले राया सी तातदेवा  
 ॥आताय तो मीलो भआ सो द्यावा॥ २१॥  
 ॥री ११ ती चाडो छक सादेहि॥ अनुता  
 ॥पेसंतं सदिशा दारी॥ २२॥ आकृ भावें  
 ॥उदी लदो ही बा ही गेदु बाभे टदे लव  
 ॥लाही॥ नीरं नीउ पारहे॥ चो  
 ॥क आ को हो यां बाहि॥ २३॥ दु  
 ॥रोनि पा आटा पाहे॥ जयाद्रिणि  
 ॥कै बल्य मोक्ष अहे॥ जवळ युनी  
 ॥पुसे बावळ का सी॥ वय सान तु को  
 ॥णवन वा सी॥ २४॥ सर्ववृत्त सा  
 ॥गेनारदा सी॥ कृ पातोष तोष देव  
 ॥कृषी॥ गुरु मत्रो वा चुनी दिव कैचा  
 ॥श्रम सर्व बोल तीव्र द वा चा॥ पुनी  
 ॥सांग उदगार कर गेचा॥ मंत्रराज



The Kalawade Sanskrit Mandal, Chhule and the Vaswanitao Chavhan Project, Mumbai, India.

॥ दादरा अस्त्रा च ॥ २४ ॥ धुरुका  
॥ निसोंगो न मुनी जला ॥ जपता ची  
॥ हृदय स्त्रै गटला ॥ लोक लिच्छ  
॥ वै कुट पाव आला ॥ जयाद्री की  
॥ समुख उभाटे ला ॥ २५ ॥ सर्वते जा  
॥ चीयेक मुख आली ॥ तेवी कां जीची  
॥ दी सत्तै ब्रह्म र ॥ तुरुर्भुज सायुध  
॥ घननी का रि  
॥ यले ॥ २६ ॥ न रे पूजी लाहुणी  
॥ के री ॥ इला पागता रे इच्छी  
॥ लोसी ॥ राधी राकि स्वर्गभोगवा सी ॥  
॥ कर्ह देउं की सागआ पणासी ॥ २७ ॥  
॥ तुसी भक्ती ची त्रितिमज दे ई ॥ पाद  
॥ दी जेनु दवि दुजि आई ॥ मनो चृती चे  
॥ वास सुसे पाई ॥ गर्भ वासी सीण लो

॥ वैदों कार्त ॥ २८ ॥ दि व्यविमाननी  
 ॥ वावोनी धुर ने ला ॥ धुर ना मे तो  
 ॥ लोक वस विला ॥ धुर भती ने नीज  
 ॥ पद गेका ॥ धू वास नी आठ छ बैस  
 ॥ वीला ॥ २८ ॥ चंद्र सुर्य घटा दिग पा  
 ॥ तारा ॥ रुषी सर्व द्याती तीज याफेरा  
 ॥ जरा भर धान  
 ॥ लोल तीज्य  
 ॥ रव्यान ऐकती  
 ॥ अक्षर वारु  
 ॥ छिशा यवा चौ  
 ॥ नीगुणि नाचे ॥ ३ ॥ इती धुर आ  
 ॥ रव्यान स्त्र मासा ॥ धा धा ॥ ४ ॥ ८ ॥  
 ॥ द्व  
 ॥ तुकाचा चे अभांग  
 ॥ ते काय पोवाउ नाही म्याओ कीलो ॥  
 ॥ गोपा करकीले चनात री ॥ १ ॥ माय  
 ॥ चावो पवा हो वोनी राक्ष स ॥ लाग



The Rajawade Sanskrit Manuscript of the Yashoda Mantra Chavhan Pratishthan Museum Mumbai

॥ लावना स्त्री हु कठे ॥ २ ॥ गगना सी  
 ॥ ज्याछालका गती तु ना बढ़ ॥ गोध  
 ॥ न गोपा ढं वेडा बैली ॥ ३ ॥ तु काल  
 ॥ लेते थे पका बयावाट ॥ नाही बानी  
 ॥ पंट औ स्से जाले ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥  
 ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ धउकला आने गा व्याघे तीवरी ॥  
 ॥ गोपाळ की ॥ वीनी ॥ १ ॥ आरे  
 ॥ हृष्ण काय ॥ करवा ॥ आला  
 ॥ रेखण वाजन ॥ गाला ॥ २ ॥ आरेस  
 ॥ हमातु स्से नाम बहु ॥ चंत ॥ हो यद्यपा  
 ॥ वंल ॥ रखे आहा ॥ ३ ॥ तु कालणे  
 ॥ ज्ञारे हृष्ण नारा यणा ॥ गोपाळ क  
 ॥ रुण भाकी ताती ॥ ४ ॥ ८ ॥ २ ॥ ८ ॥  
 ॥ आरे हृष्ण आही तु स्से नीज मडी ॥ न  
 ॥ वनी स उनवडी दे तहो ले ॥ ५ ॥ आरेस

॥ श्वाआ ताराखेकै सेतरी ॥ संकरा  
 ॥ नीतरीप ऊयले ॥ २ ॥ वसषला ईश  
 ॥ द्रंजे कासी काधारा ॥ गोवर्धन क  
 ॥ रीउचली ला ॥ ३ ॥ तुकाह्यणेतुस्ते पे  
 ॥ वाड गोपाका ॥ वर्णीती सकलना  
 ॥ रायण ॥ ४ ॥ श्वारा ॥ ५ ॥  
 ॥ आरेह श्वार  
 ॥ दोदरगडी  
 ॥ हृष्मातुवाद  
 ॥ धीकले लीआरामी ॥ २ ॥ गोपोक  
 ॥ करुणा औसीना नापरी ॥ जाकी  
 ॥ तीश्रीतारीजुजपुठे ॥ ३ ॥ तुसी  
 ॥ नामेत्रैसी घेतोकरुणोधी ॥ तुका  
 ॥ ह्यणेत्रैसाधीआलीकरण ॥ ४ ॥  
 ॥ ४ ॥



The Revieweradeo  
 Keshodhan Mandal, Dhule ७/१०  
 Dr. Yashwantrao Chavhan  
 Sahitya Akademi Member

प्राप्त लगावा  
भवितव्यरण लिहो सुख  
परी पाने तांची बिल्कुल  
ग्राम काम

(12)

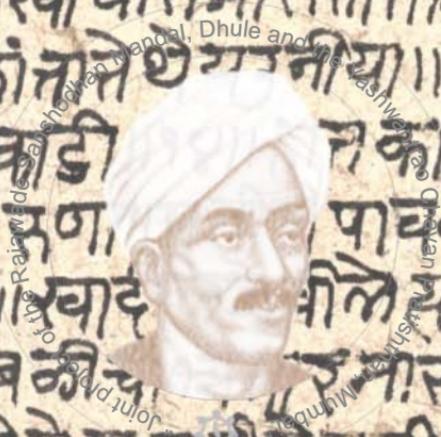


॥ श्री गणेशा योने ॥ चोर्खा मेलीयानेपा  
 ॥ जीयलेदहि ॥ पहोदीलेनीहीउपे ॥  
 ॥ चू ॥ १ ॥ साधनहादसीआलीघुकुवे  
 ॥ की ॥ उटोजीप्रातःकाकीकायबोल ॥  
 ॥ २ ॥ उटीमुदीकातास्वयपाककरी ॥ आ  
 ॥ तायतिलहरीपारप्पसी ॥ ३ ॥ कौत  
 ॥ यकेब्रायामार कीलीमात ॥ लेण  
 ॥ दीवाणामस ॥ ४ ॥ दीवाणानी  
 ॥ दुत्तधाडीलेत ॥ अपे चोर्खीया  
 ॥ सीधलनीआ अउनीयादुतक  
 ॥ मरआसडीले ॥ लेयोर्खा मेलीकाय  
 ॥ जोले ॥ ५ ॥ वीटोबालादहीपाजीतआ  
 ॥ सत्ता ॥ कारे माझ्याहुत्ता आ सडीले  
 ॥ ६ ॥ ससोनीयावीटोगीलाहुणुनी ॥ ८  
 ॥ उदीर्घ झगीवल्लनीया ॥ ७ ॥ सभचे  
 ॥ ह्यवत्तीरउत्तोसीकारे ॥ तो झणीवी  
 ॥ च्यास औका माझा ॥ ९ ॥ वीटोबा



Portrait of Sanskrit Manda, Uncle and the Yogi

॥लाधभीपाजौत आसता॥धर्मीमास  
॥हन्ताआसडीले॥१०॥हन्तीया माहा  
॥रानेदेववारवीला॥जीवेमारधला  
॥जं पावेल॥१६॥बाधोनीया मोटहकी  
॥तीवेल॥धर्तनीसीवाक वाटेउभा॥  
॥१२॥तेहायाच्याकातोकल्लीहीमान  
॥तुझेचोखीयातमारीताती॥१३॥तेहा  
॥साधीकांतातेछग्गनीया॥हन्तेदेवरा  
॥याहातकाढी  
॥करीकरण,  
॥सी॥१५॥रवाद  
॥कार॥दवन्नील  
॥१६॥सभेचेशजनीबोलतीकोकासी  
॥तील्लेतुमासीनकलेकाही॥१७॥अन  
॥तश्चमाडजयाचेउदरी॥यानचहकरी  
॥धरीयले॥१८॥मारीणीचेबोल्लीध  
॥लेदक्करान॥तथोसमाधानचोरवामके  
॥१९॥दीनाहनादीनबोलतीब्राह्मण॥मणी  
॥नारायणदीवीआत्मा॥२०॥तुकाल्लेदव



Use Rajmachi de Daudhan Mandal, Dhule and  
Rajmachi de Nashwan D.  
Jotirpande of Nashwan D.  
and Mumba

भक्ताचाकैधरी॥ श्रीरामकृष्णवसा॥ पव  
 ॥ तोभरवसाजकालागी॥ २१॥ ४  
 ॥ विडाद्यानारायण॥ हृष्णाजगत्राजवन  
 ॥ विनविजिरखुमाई॥ दासिहोइनमींका  
 ॥ नू॥ विडाद्यावोनारायण॥ ५॥ ५  
 ॥ जीहेनाभद्रेष्ठी॥ पानेयेउनियांकरि॥  
 ॥ मीपणजातुनि चुम्बाद्याविलु  
 ॥ द्वावरि॥ ६  
 ॥ कोउनियांस्त्रेत्तुपारि॥ जावा  
 ॥ र्थकपुराने॥ येत्तेनिधारि॥  
 ॥ ७॥ विडाद्यावोनारायण॥ विवेक  
 ॥ कातरग। मेकविल्लयुरंग॥ ८  
 ॥ राघ्यजायफँडें॥ अग्निष्ठादित्ताचा  
 ॥ रा॥ ९॥ विडाद्यावोनारायेपण॥ द्या  
 ॥ तेजायपत्रि॥ क्षमालवेगा अग्निष्ठा  
 ॥ द्या॥ खुबुधवेन्दोउ॥ द्विवरासि



The Rajawade Sanscrito Mandal, Dhule and the Vyas Wantrao Chavda Trust, Mumbai.

(16)

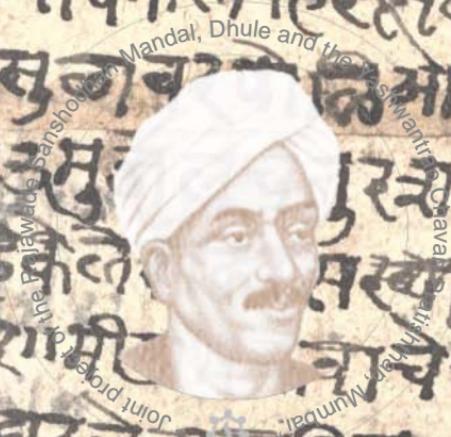
॥ आर्तिव्या ॥ ४ ॥ विउद्धावे  
॥ नरायणा ॥ विनविलिरत्व  
॥ मायी ॥ कन्दीहोयीनमीकान्  
॥ ३ ॥ विउद्धावे नरायणा ॥ ५ ॥



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishthan, Mumbai."

१३१

॥ करमि लिहा त्रम हो दुना नेला रि मी उ  
॥ भी कबा चद्वारि लुदग लवा जबा  
॥ अनकी रदु समा ना का पत्त्या कि तिय  
॥ कमा नागि रथा घालुन मो हिल समा  
॥ झुया प्राण धेन ले हिरत दह भाका  
॥ चेष्टक सु जा चरि लिमा न धाका  
॥ कोण उसु तु रस्ता इणा सु  
॥ सना हिकले सरस्या व्यउनि  
॥ संस्कारामी त्रा चद्वारि ॥१॥  
॥ काला घट च अखुरि लाही विसुहो  
॥ ता चया युंतला सख्यो करि तो



The Pajawale Sanskrit Mandal, Dhule and the West Marathi Chavas  
Joint Project of the Pajawale Sanskrit Mandal, Dhule and the West Marathi Chavas  
University, Mumbai.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीर  
 मः रविं इमंगलबुधगुरुश्चक्र  
 राहुकेतुमंगलद्वय अधिति  
 ॥ रित्तरणतरितरितो इत्तुजवरीन  
 ॥ ग्रामानन्दका ॥ ६ ॥ सादिष्ठसाराय  
 ॥ धैपसाराकर  
 ॥ कान्ताहु ॥ संसारीकरीभ  
 ॥ जापका ॥ सिंहकाळाजा  
 ॥ हारेकपालपाण्डसाटीरोटासाटी  
 ॥ चारिकरित्तिकायथोरिभरित्ति  
 ॥ राडपोरिकुणाच्यागाढवा ॥ ३ ॥  
 ॥ लटकीमायापुसकवीरायादिव  
 ॥ सहेदिवसहेच्यारिभरित्ति ॥ नि

The Rajendra Sandhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Savan Prabhu, Mumbai, India





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)